संपादकीय

रहने लायक बने शहर

दिलचस्प *बात है कि बड़े शहरों में मोस्ट लिवेबल सिटी का ताज भले बेंगलुरु को मिला हो, पर क्वॉलिटी ऑफ लाइफ के आधार पर चेन्नै, कोयंबटूर और नवी मुंबई को क्रमश: पहला, दूसरा और तीसरा स्थान दिया गया। केंद्रीय आवास तथा शहरी मामलों के मंत्रालय द्वारा गुरुवार को जारी की गई शहरों की रैंकिंग कई लिहाज से महत्वपूर्ण है। साफ-सफाई और अन्य सुविधाओं के आधार पर शहरों की रैंकिंग पहले से होती आई है। इस बार ईज ऑफ लिविंग इंडेक्स में इन शहरों की गुणवत्ता को वहां रहने वाले लोगों की नजर से कुछ खास पैमानों पर नापने की कोशिश की गई है। दस लाख से अधिक आबादी वाले शहरों में बेंगलुरु, पुणे और अहमदाबाद तथा दस लाख से कम आबादी वाले शहरों में शिमला, भुवनेश्वर और सिलवासा को क्रमश: पहला, दूसरा और तीसरा स्थान मिला। दिलचस्प बात है कि बड़े शहरों में मोस्ट लिवेबल सिटी का ताज भले बेंगलुरु को मिला हो, पर क्वॉलिटी ऑफ लाइफ के आधार पर चेन्नै, कोयंबटूर और नवी मुंबई को क्रमश: पहला, दूसरा और तीसरा स्थान दिया गया।*

क्वालिटी ऑफ लाइफ में सस्ते आवास, साफ पानी, शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधाएं, सुरक्षा तथा मनोरंजन के साधनों की उपलब्धता जैसे कारक रखे गए थे। मगर किसी भी शहर की लिवेबिलिटी इस सवाल को परे रखकर अधूरी ही मानी जाएगी कि वह शहर रोजगार के कितने और किस तरह के अवसर उपलब्ध करा सकता है। साफ हवा, पानी, सुंदर दृश्य, सड़कों पर कम ट्रैफिक और घर के आसपास बाजार, हॉस्पिटल जैसे सुविधाएं किसी शहर को रहने लायक बनाती हैं, लेकिन वहां रहने वाले काम क्या करेंगे, उनकी आजीविका के साधन क्या होंगे इन सवालों से ही यह तय होता है कि वहां कौन लोग बसने आएंगे। आजीविका के अभाव में वहां पेंशन पर गुजारा करने वाले या किसी और की कमाई पर आश्रित लोग जरूर आएंगे, लेकिन कमाकर खाने वाली आबादी नहीं आ पाएगी। अगर ये सुविधाएं मिल गई तो इसका मतलब यह होगा कि वहां तरह-तरह के कारखाने लगेंगे। इससे एक तो काम की तलाश में आने वालों की संख्या बढ़ेगी, दूसरे प्रदूषण भी बढ़ेगा जिसका नतीजा यह हो सकता है कि कुछ समय में वे पहले की तरह 'रहने लायक' न रह जाएं। जैसा कि दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों के साथ हुआ या हो रहा है।

इसी बिंदु पर अर्बन प्लानिंग की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। हमारे सामने लंदन जैसे शहरों के उदाहरण हैं जो किसी जमाने में दुनिया के सबसे बड़े रोजगार केंद्रों में शुमार होते थे और सबसे गंदे शहरों में उनकी गिनती होती थी। पर समय के साथ वे बहुत सारे रोजगार देने के बावजूद सुंदर, साफ और बेहतरीन शहरों में शुमार हुए। ईज ऑफ लिविंग इंडेक्स इस मायने में तो उपयोगी है ही कि यह शहरों में उपलब्ध सुविधाओं को वहां रहने वालों की नजर से समझने का मौका देता है, पर इसकी सबसे बड़ी सार्थकता इस बात में होगी कि देश की श्रमशील और उत्पादक आबादी को अपनी ओर खींचने वाले शहरों को अधिक से अधिक रहने लायक भी बनाया जा सके।

करनी से रेखांकित हो राजनीतिक संवेदनशीलता

राजनीति

विश्वनाथ सचदेव

जब देश का प्रधानमंत्री किसी अस्पताल में पहुंचे टीका लगवाने के लिए तो वातावरण में तनाव दिखना स्वाभाविक है। शायद इसी तनाव को हल्का करने के लिए प्रधानमंत्री ने टीका लगाने के लिए काम में ली जा रही लंबी सूई को देखकर टिप्पणी की होगी। जब नर्स वह इंजेक्शन लगाने के लिए आगे बढ़ी तो प्रधानमंत्री ने पूछा-ऐसी सूई तो शायद जानवरों के डाक्टर काम में लेते हैं? नर्स को समझ नहीं आया कि वह क्या बोले। तब प्रधानमंत्री ने कुछ मुस्कराते हुए कहा था, वे सोच रहे थे शायद अस्पताल वाले जानवरों को लगाने वाली सूई इस्तेमाल करेंगे 'क्योंकि राजनेताओं को भी मोटी चमड़ी वाला माना जाता है।' इस पर तो वातावरण का तनाव कम होना ही था। हंसते-मुस्कराते कब टीका लग गया, पता ही नहीं चला।

फिर, सुना है, प्रधानमंत्री आधा घंटा अस्पताल में रहे थे, यह देखने के लिए कि टीके का कोई विपरीत असर तो नहीं होता है। ऐसा कुछ नहीं हुआ, उम्मीद भी यही थी। इस आधे घंटे में प्रधानमंत्री ने क्या बातें कीं, यह नहीं पता, पर राजनेताओं की मोटी चमड़ी वाली उनकी बात अब भी हवा में गूंज रही है। सच है, राजनेताओं की मोटी चमड़ी के उदाहरण खोजने की ज़रूरत नहीं पड़ती, हर तरफ बिखरे पड़े हैं ऐसे उदाहरण। इस मोटी चमड़ी के कई मतलब होते हैं, जैसे यह बात कि राजनेताओं के बारे में भले ही कुछ भी कहा जाता रहे, दिखाते वे यही हैं कि उन्हें कुछ फर्क नहीं पड़ता।

वैसे, शायद, फर्क पड़ता भी नहीं है, अन्यथा हमारे नेता अपनी वाणी और व्यवहार, दोनों, पर अंकुश लगाने की आवश्यकता और महत्ता को अवश्य समझते। पर आये दिन दिखने वाले उदाहरणों को देख कर यह सहज ही कहा जा सकता है कि ऐसी कोई चिंता हमारे राजनेताओं को नहीं हैं। वे यह मानकर चलते हैं कि या तो देश की जनता कुछ समझती नहीं, या फिर उसके समझने से कोई अंतर नहीं पड़ता। हम भले ही यह कहते रहें कि 'यह पब्लिक है, सब जानती है' और समय आने पर सबक भी सिखा सकती है, पर हमारे राजनेताओं को तो, निश्चित ही, यह लगता है कि जनता कुछ भी कहती-करती रहे, उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा। मोटी चमड़ी इसी को कहते हैं।

नेताओं के संबंध में आप कुछ भी कहते रहें, वे यह जानते हैं कि उनकी राजनीति चलती रहेगी। इसलिए वे भी कुछ भी करते-कहते रहते हैं। वे यह भी मानते हैं कि उनका कुछ बिगड़ेगा नहीं। उनकी राजनीति की दुकान चलती रहेगी। यही कारण है कि न तो हमारे राजनेता भ्रष्टाचार के आरोपों से डरते हैं और न ही उन्हें सज़ायाफ्ता होने का ही कोई डर होता है। हमने भ्रष्टाचार के आरोपी नेताओं को उंगलियों से जीत का निशान बनाकर जेल जाते हुए देखा है और सज़ा काटकर आने के बाद ज़िंदाबाद के नारों के साथ जेल के दरवाजे से बाहर निकलते भी देखा है।

यह सही है कि सारे नेता ऐसे नहीं होते, पर जो ऐसे होते हैं, वे एक मछली की तरह सारे जल को गंदा करने के लिए काफी हैं। मज़े की बात तो यह है कि मोटी चमड़ी वाले राजनेता हर दल में मिल जाते हैं। यह कहना ज़्यादा सही होगा कि जो राजनेता ज़्यादा मोटी चमड़ी वाला होता है, वह राजनीति के तराजू पर ज़्यादा भारी भी माना जाता है।

गिरगिट की तरह रंग बदलने में माहिर होते हैं हमारे राजनेता। समय और अपने स्वार्थ की मांग के अनुसार वे कभी भी अपनी टोपी का रंग बदल सकते हैं, बदल लेते हैं। हर चुनाव के पहले, या वैसे भी, हम इन राजनेताओं को टोपियां बदलते देखते हैं। कल तक वे जिस रंग की टोपी का मज़ाक उड़ाते रहे थे, आज उसी रंग की टोपी पहन कर, वे ताल ठोक कर मैदान में उतर आते हैं। नीति, सिद्धांत, मूल्य, आदर्श कुछ भी आड़े नहीं आता। न उन्हें कल तक के घोषित विरोधी को गले लगाने में कोई संकोच होता है और न ही उन नारों को अपनाने में, जिनकी वे कल तक भर्त्सना कर रहे थे। नेताओं के दलबदल से अब किसी को कोई आश्चर्य नहीं होता और न ही राजनेताओं को कहीं ऐसा लगता है कि उनके समर्थक क्या कहेंगे।

ये समर्थक भले ही कल तक के विरोधियों के साथ जुड़ने में संकोच करें, भले ही उन्हें लगे कि वे क्या मुंह दिखायेंगे, पर दलबदलू राजनेताओं को मुंह दिखाने में कोई शर्म नहीं आती। वे इस बात की भी आवश्यकता नहीं समझते कि अपने किये का कुछ तर्क समझायें। लोग उन्हें लेकर कुछ भी कहते रहें, वे सुनते ही नहीं। न उन्हें अपना कुछ किया ग़लत लगता है, और न ही कुछ कहा हुआ। सच बात तो यह है कि वे यह मान लेते हैं कि कल जो उन्होंने कहा था, वह कल की बात थी, जो बीत गयी सो बात गयी!

पर ऐसा होता नहीं है। बीती को बिसार कर आगे की सुधि लेना एक लाभकारी नीति हो सकती है, पर कम से कम राजनेताओं के संदर्भ में ऐसा नहीं होना चाहिए। आखिर हम उनके हाथों में अपना भविष्य सौंपते हैं। उन पर भरोसा करते हैं हम। जनता के इस भरोसे का अपमान करने का अधिकार किसी को नहीं होना चाहिए। देश के नेताओं को देश की जनता के प्रति जवाबदेह होना ही होगा। उन्हें अपने कहे-किये की जवाबदारी लेनी ही होगी। जनता का यह अधिकार है कि वह जाने कि कल तक किसी एक पार्टी का झंडा उठाने वाला आज दूसरी पार्टी यानी कल तक अछूत समझी जाने वाली पार्टी का दामन कैसे थामने लग गया? और जनता को यह जानने का हक भी है कि हमारे नेता क्यों यह मानकर चलते हैं कि उनके कहे को जनता भूल जाये?

प्रधानमंत्री यदि यह कहते हैं कि वे किसी व्यक्ति विशेष को कभी मन से स्वीकार नहीं कर पायेंगे तो उन्हें इस बात का जवाब देना ही होगा कि वह व्यक्ति विशेष उनकी पार्टी के लिए महत्वपूर्ण कैसे बन गया? विपक्ष में बैठा कोई राजनेता यदि रातों-रात सत्तारूढ़ दल की अगली पंक्ति में आकर बैठ जाता है तो उसे जनता को यह बताना ही होगा कि कल तक जो वह कह रहा था, वह ग़लत कैसे था? राजनेताओं का मोटी चमड़ी का होना उनके लिए भले ही राजनीतिक सुविधा हो, पर उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि उनकी संवेदनशीलता ही अंतत: उन्हें सही नेता बनाती है। संवेदनहीन राजनीति के लिए जनतांत्रिक व्यवस्था में कोई स्थान नहीं होना चाहिए।

उस दिन प्रधानमंत्री ने भले ही अस्पताल में वातावरण को हल्का बनाने के लिए मोटी चमड़ी वाली बात कही हो, पर यह मोटी चमड़ी हमारी राजनीति की एक हकीकत है। बदलनी चाहिए यह हकीकत। वास्तव में सब नेता संवेदनहीन नहीं होते, पर ऐसे संवेदनशील नेताओं का ही यह दायित्व बनता है कि वे अपनी कथनी-करनी से राजनीति में संवेदनशीलता की आवश्यकता को रेखांकित करें।

क्यों मनाया जाता है अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, जानिए इतिहास

विश्व महिला दिवस पर विशेष

मधुलिका चौधरी

विश्व की हर महिला के सम्मान में 8 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता हैं। लेकिन महिला दिवस मनाए जाने का इतिहास हर कोई नहीं जानता। जानिए महिला दिवस को इतिहास के झरोखों से -

8 मार्च को मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर संपूर्ण विश्व की महिलाएं देश, जात-पात, भाषा, राजनीतिक, सांस्कृतिक भेदभाव से परे एकजुट होकर इस दिन को मनाती हैं। साथ ही पुरुष वर्ग भी इस दिन को महिलाओं के सम्मान में समर्पित करता है।

दरअसल इतिहास के अनुसार समानाधिकार की यह लड़ाई आम महिलाओं द्वारा शुरू की गई थी। प्राचीन ग्रीस में लीसिसट्राटा नाम की एक महिला ने फ्रेंच क्रांति के दौरान युद्ध समाप्ति की मांग रखते हुए इस आंदोलन की शुरूआत की, फारसी महिलाओं के एक समूह ने वरसेल्स में इस दिन एक मोर्चा निकाला, इस मोर्चे का उद्देश्य युद्ध की वजह से महिलाओं पर बढ़ते हुए अत्याचार को रोकना था।

सन 1909 में सोशलिस्ट पार्टी ऑफ अमेरिका द्वारा पहली बार पूरे अमेरिका में 28 फरवरी को महिला दिवस मनाया गया। सन 1910 में सोशलिस्ट इंटरनेशनल द्वारा कोपनहेगन में महिला दिवस की स्थापना हुई और 1911 में ऑस्ट्रि?या, डेनमार्क, जर्मनी और स्विटजरलैंड में लाखों महिलाओं द्वारा रैली निकाली गई। मताधिकार, सरकारी कार्यकारिणी में जगह, नौकरी में भेदभाव को खत्म करने जैसी कई मुद्दों की मांग को लेकर इस का आयोजन किया गया था।

1913-14 प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, रूसी महिलाओं द्वारा पहली बार शांति की स्थापना के लिए फरवरी माह के अंतिम

रविवार को महिला दिवस मनाया गया। यूरोप भर में भी युद्ध के खिलाफ प्रदर्शन हुए। 1917 तक विश्व युद्ध में रूस के 2 लाख से ज्यादा सैनिक मारे गए, रूसी महिलाओं ने फिर रोटी और शांति के लिए इस दिन हड़ताल की। हालांकि राजनेता इस आंदोलन के खिलाफ थे, फिर भी महिलाओं ने एक नहीं सुनी और अपना आंदोलन जारी रखा और इसके फलस्वरूप रूस के जार को अपनी गद्दी छोड़नी पड़ी साथ ही सरकार को महिलाओं को वोट देने के अधिकार की घोषणा भी करनी पड़ी।

महिला दिवस अब लगभग सभी विकसित, विकासशील देशों में मनाया जाता है। यह दिन महिलाओं को उनकी क्षमता, सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक तरक्की दिलाने व उन महिलाओं को याद करने का दिन है, जिन्होंने महिलाओं को उनके अधिकार दिलाने के लिए अथक प्रयास किए। संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका- संयुक्त राष्ट्र संघ ने महिलाओं के समानाधिकार को बढ़ावा और सुरक्षा देने के लिए विश्वभर में कुछ नीतियां, कार्यक्रम और मापदण्ड निर्धारित किए हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार किसी भी समाज में उपजी सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक समस्याओं का निराकरण महिलाओं की साझेदारी के बिना नहीं पाया जा सकता।

भारत में भी महिला दिवस व्यापक रूप से मनाया जाने लगा है। पूरे देश में इस दिन महिलाओं को समाज में उनके विशेष योगदान के लिए सम्मानित किया जाता है और समारोह आयोजित किए जाते हैं। महिलाओं के लिए काम कर रहे कई संस्थानों द्वारा जैसे अवेक, सेवा, अस्मिता, स्त्रीजन्म, जगह-जगह महिलाओं के लिए प्रशिक्षण शिविर लगाए जाते हैं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। समाज, राजनीति, संगीत, फिल्म, साहित्य, शिक्षा क्षेत्रों में श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए महिलाओं को सम्मानित किया जाता है। कई संस्थाओं द्वारा गरीब महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

भारत में महिलाओं को शिक्षा, वोट देने का अधिकार और मौलिक अधिकार प्राप्त है। धीरे-धीरे परिस्थितियां बदल रही हैं। भारत में आज महिला आर्मी, एयर फोर्स, पुलिस, आईटी, इंजीनियरिंग, चिकित्सा जैसे क्षेत्र में पुरुषों के कंधे से कंधा मिला कर चल रही हैं। माता-पिता अब बेटे-बेटियों में कोई फर्क नहीं समझते हैं। लेकिन यह सोच समाज के कुछ ही वर्ग तक सीमित है।

सही मायने में महिला दिवस तब ही सार्थक होगा जब विश्व भर में महिलाओं को मानसिक व शारीरिक रूप से संपूर्ण आजादी मिलेगी, जहां उन्हें कोई प्रताड़ित नहीं करेगा, जहां उन्हें दहेज के लालच में जिंदा नहीं जलाया जाएगा, जहां कन्या भ्रूण हत्या नहीं की जाएगी, जहां बलात्कार नहीं किया जाएगा, जहां उसे बेचा नहीं जाएगा। समाज के हर महत्वपूर्ण फैसलों में उनके नजरिए को महत्वपूर्ण समझा जाएगा। तात्पर्य यह है कि उन्हें भी पुरुष के समान एक इंसान समझा जाएगा। जहां वह सिर उठा कर अपने महिला होने पर गर्व करे, न कि पश्चाताप, कि काश मैं एक लड़का होती।

आजकल

अमेरिका की संतुलन की नीति

पिछले कुछ महीनों से कश्मीर को लेकर उत्पन्न आशंकाओं को दूर करते हुए अमेरिका ने स्पष्ट कर दिया है कि इस मामले में उसकी नीति में कोई बदलाव नहीं होगा। एक लिहाज से यह भारत के लिए अच्छा संकेत है। जो बाइडेन के राष्ट्रपति बनने के बाद माना जा रहा था कि कश्मीर को लेकर अमेरिका अपना रुख बदल सकता है और उससे भारत के लिए मुश्किलें पैदा हो सकती हैं। इसके पीछे वजह यह थी कि उपराष्ट्रपति कमला हैरिस ने राष्ट्रपति चुनाव प्रचार के दौरान कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाने का विरोध किया था।

साथ ही उन्होंने कश्मीर में इंटरनेट पर पाबंदी और लोगों को हिरासत में लिए जाने को लेकर भी भारत की कड़ी आलोचना की थी और इसे मानवाधिकारों का उल्लंघन बताया था। इससे यह संदेश गया था कि अगर बाइडेन सत्ता में आए तो कश्मीर को लेकर अमेरिकी नीति में बदलाव देखने को मिल सकते हैं। पर अब कश्मीर व भारत-पाकिस्तान रिश्तों को लेकर अमेरिका ने जिस तरह के रुख के संकेत दिए हैं, वे उसकी संतुलन की नीति को प्रतिबिंबित करते हैं। अमेरिका न तो भारत को नाराज करके चलेगा, न पाकिस्तान के प्रति कड़ा रुख दिखाने वाला है।

अमेरिका ने भारत में पाकिस्तान सीमा से होने वाली घुसपैठ और सीमा पर संघर्षविराम के उल्लंघन की घटनाओं को लेकर चिंता जताई है और कहा है कि यह बंद होना चाहिए। उसका यह रुख पाकिस्तान के लिए एक संदेश के रूप में भी देखा जा सकता है। हालांकि पूर्व में भी अमेरिकी नेताओं-सांसदों और विदेश विभाग की ओर से ऐसे बयान आते रहे हैं। पर हाल का विदेश विभाग का यह बयान इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि पिछले महीने की पच्चीस तारीख को भारत और पाकिस्तान के सैन्य महानिदेशकों की बैठक हुई थी और उसमें संघर्षविराम नहीं तोड़ने को लेकर सहमति बनी थी। इस बैठक को अमेरिकी प्रयासों के नतीजे के रूप में भी देखा जा रहा है। शांति वार्ता प्रक्रिया बहाल करने को लेकर भी अमेरिका ने उम्मीदें जताई हैं। लेकिन सवाल है कि यह संभव होगा कैसे!

महिलाओं में बसती है परिवार की जान, इन 8 बीमारियों से रखें उन्हें सावधान

महिलाओं में होने वाली स्वास्थ्य समस्याएं पुरुषों से अलग होती हैं। दिल की बीमारी, मासिक धर्म चक्र, मीनोपॉज, ब्रेस्ट कैंसर ऐसी बीमारियां हैं, जो एक औरत को सबसे ज्यादा प्रभावित करती हैं।

हमारा स्वास्थ्य हमारी सबसे बड़ी दौलत है। इसका मोल तब समझ आता है, जब हम इसे खो देते हैं। अपने जीवन में हम औरतें कब और कितनी बार बीमार पड़ती हैं, पता नहीं। परिवार की जिम्मेदारी निभाने के चक्कर में खुद के स्वास्थ्य के साथ अच्छा खासा खिलवाड़ होता है। ऐसा नहीं है कि पुरुष बीमार नहीं पड़ते या उन्हें कोई स्वास्थ्य समस्या नहीं होती। दोनों अलग-अलग स्वास्थ्य समस्याओं से गुजरते हैं। इस वजह से दोनों में होने वाली बीमारी का इलाज भी अलग होता है। लेकिन कई स्वास्थ्य समस्याएं केवल महिलाओं को ही ज्यादा प्रभावित करती हैं।

आपको शायद यकीन न हो, लेकिन पुरुषों की तुलना में हार्ट अटैक से होने वाली मौतों में महिलाओं का आंकड़ा ज्यादा होता है। अवसाद और चिंता के लक्षण महिला रोगी में ज्यादा देखे जाते हैं। यहां तक कि यूरेनरी ट्रैक्ट की स्थिति से भी ज्यादातर महिलाएं गुजरती हैं और यौन संचारित रोग महिलाओं को ही ज्यादा नुकसान पहुंचाते हैं। ये सभी बीमारियां उनके जोखिम को बढ़ाकर उनसे उनकी जिन्दगी तक छीन सकती हैं। वुमन्स डे के मौके पर हम आपको बता रहे हैं महिलाओं में सबसे ज्यादा जोखिम पैदा करने वाली इन 8 बीमारियों के बारे में।

अवसाद और चिंता

इन दोनों स्थितियों पर महिलाओं का ध्यान जरा कम ही जाता है, लेकिन बार-बार ऐसा होना चिंता की बात है। हार्मोन्स में उतार-चढ़ाव अवसाद या चिंता पैदा कर सकता है। पेरिमेनोपॉज और रजोनिवृत्ति में बदलाव अवसाद का कारण बन सकता है।

गर्भावस्था से जुड़े मुद्दे

गर्भावस्था महिलाओं के लिए बहुत अच्छा अनुभव है। लेकिन किसी महिला को अस्थमा, मधुमेह या अवसाद है तो ऐसे में मां और बच्चे दोनों को नुकसान पहुंच सकता है। गर्भावस्था में एक महिला के शरीर में खून की कमी हो सकती है, जिसे एनीमिया कहते हैं। एक गंभीर समस्या तब पैदा होती है जब बच्चा गर्भाशय में न आकर फैलोपियन ट्यूब में चला जाता है। यह स्थिति एक महिला के लिए बहुत घातक है। यह कई महिलाओं के मौत का

कारण भी है।

स्त्री रोग संबंधी स्वास्थ्य

महिलाएं मासिक धर्म, प्रसव, गर्भावस्था और रजोनिवृत्ति जैसे कई चरणों का अनुभव करती हैं। ब्लीडिंग और डिस्चार्ज भी मासिक धर्म चक्र का एक हिस्सा है, जो स्थिति को बदतर बना सकता है। कई बार यौनि से जुड़ी समस्या भी रिप्रोडक्टिव ट्रेक्ट कैंसर को जन्म देती है। अनदेखा करने पर इंफर्टिलिटी और किडनी फेलियर जैसी गंभीर स्थितियां बन सकती हैं।

दिल की बीमारी

आमतौर पर हार्ट अटैक पुरुषों की बीमारी मानी जाती है। लेकिन ऐसा नहीं है। हृदय रोग पुरुषों में एक आम बीमारी है, लेकिन यह महिला और पुरुष दोनों को समान रूप से प्रभावित करती है। अब भी केवल 54 प्रतिशत महिलाओं को पता है कि यह उनके लिंग को खतरे में डालने वाली सबसे खतरनाक हेल्थ कंडीशन है।

ओवेरियन एंड सर्वाइकल कैंसर

कई महिलाएं आज भी दोनों के बीच का अंतर नहीं जानतीं। ओवेरियन कैंसर निचले गर्भाशय में होता है, जबकि सर्वाइकल कैंसर की शुरुआत फैलोपियन ट्यूब से होती है। दोनों स्थितियों में दर्द एक जैसा होता है। लेकिन ओवेरियन कैंसर में संभोग के दौरान महिलाएं डिस्चार्ज और दर्द का अनुभव करती हैं। ऐसी स्थिति में डॉक्टर्स पैप स्मीयर टेस्ट कराने की सलाह देते हैं। इस टेस्ट के जरिए सर्वाइकिल कैंसर का पता लगाना आसान है , ओवेरियन कैंसर का नहीं।

ब्रेस्ट कैंसर

महिलाओं में ब्रेस्ट कैंसर मौत का सबसे बड़ा कारण है। यह अक्सर मिल्क डक्ट की सतह में उत्पन्न होता है। शुरुआत में महिलाएं स्तन में गांठ का अनुभव कर सकती हैं। इसलिए समय न गंवाते हुए डॉक्टर से इसकी जांच कराना बेहद जरूरी है।